भारत की समुद्री कूटनीतिः चुनौतियाँ और संभावनाएँ

*डॉ. राजकुमार बैरवा

सारांश–

भारत की समुद्री कूटनीति उसकी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका उद्देश्य समुद्री सुरक्षा, व्यापारिक हितों की रक्षा और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना हैं। हिंद महासागर में अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण भारत वैश्विक व्यापार और सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। भारत "SAGAR" नीति के माध्यम से पड़ोसी देशों के साथ सहयोग और विकास को प्रोत्साहित कर रहा हैं। नई समुद्री स्थितियों के उभरने और विभिन्न सामुद्रिक खिलाड़ियों के प्रवेश के साथ समुद्री कूटनीति ने वैश्विक राजनीति को आकर्षित किया हैं। 2003 की वार्षिक रक्षा रिर्पोट में जोर देकर कहा गया कि अतीत में भारत के आसपास का समुद्री क्षेत्र पावर प्रतिद्वंद्विता का एक थियटर रहा हैं और वैश्विक सुरक्षा चिंताओं के कारण अतिरिक्त क्षेत्रीय नौसेनाओं से बढ़ती गतिविधियों का एक क्षेत्र रहा हैं। भारत में राजनीतिक निर्णय निर्माताओं को 26 नवम्बर, 2008 के अभूतपूर्व मुंबई आतंकी हमलों के बाद तटीय सुरक्षा के महत्व के बारे में सतर्क कर दिया गया था। भारतीय नौसेना के फरवरी 2009 में तटीय के साथ–साथ दूसरे देशों के समुद्री किनारों की रक्षा की जिम्मेदारी दी गई। भारत अपने समुद्री क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ा रहा हैं। हालांकि चीन का बढ़ता प्रभाव, समुद्री सुरक्षा खतरे, सीमा–विवाद और पर्यावरणीय समस्याएँ प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

कुन्जी शब्द –समुद्री कूटनीति, SAGAR नीति, समुद्री सुरक्षा ब्लू इकॉनोमी, हिंद महासागर क्षेत्र, समुद्री व्यापार, नौसैनिक शक्ति समुद्री संसाधन।

प्रस्तावना–समुद्री कूटनीति का आशय उन रणनीतिक और राजनयिक प्रयासों से है जिनके माध्यम से कोई देश अपने समुद्री हितों की रक्षा करता हैं, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाता है और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करता हैं। इसमें नौसैनिक अभ्यास, समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा मानवीय सहायता और आपदा राहत तथा क्षेत्रिय सहयोग शामिल होते हैं। भारत की समुद्री की जगह बाह्य और आंतरिक दोनों लिहाज से आज गंभीर मंथन के दौर में हैं। समुद्री बलों और दक्षिण चीन सागर से लेकर इंडो–प्रशांत क्षेत्र के ईद–गिर्द रणनीतियों के निर्माण के बीच अमेरिकी 'एशिया धुरी' के तौर पर भारत सवारी कर रहा है। जिसमें पड़ोस की समुद्री गलियों में उसे अपनी सामरिक समुद्री परिसंपत्तियों और हितों की रक्षा करना हैं।

आज के वैश्विक परिदृश्य में समुद्री कूटनीति भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है। हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति उसे वैश्विक व्यापार सुरक्षा और भू–राजनीतिक संतुलन में एक प्रमुख भूमिका प्रदान करती हैं। भारत की समुद्री सीमाएँ 7500 किमी से अधिक लंबी ह जो इसे समुद्री सुरक्षा के लिए संवेदनशील बनाती हैं। भारत अपनी नौसेना के माध्यम से समुद्री डकैती, आतंकवाद और तस्करी जैसी चुनौतियों से निपटता हैं। यह भारत की आर्थिक प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। हिंद महासागर में चीन के बढते हितों को इस प्रकार आकलन कर सकते है कि चीन एशिया प्रशांत महासागर में नौसैना पर सबसे ज्यादा खर्च करने वाले

देश के रूप में उभरा और सेना पर खर्च करने वाला दुनिया का चौथा सबसे बड़ा देश बन गया। चीन का अत्याधुनिक पनडुब्बी बेड़ा दुनिया का सबसे बड़ा होने के साथ काफी क्षमतावान भी बनने की दिशा में अग्रसर हैं। चीन ने जिन श्रेणी की पनडुब्बियों की तैनाती दक्षिण चीन सागर में हैनान द्वीप के दक्षिण में सान्या के पास अपने सबमैरिन बेस पर कर दी है जो भारत के लिए खतरे की घंटी भी है क्योंकि यह जलडमरूमध्य से महज 1200 समुद्री मील की दूरी पर स्थित है। यह हिंद महासागर में प्रवेश के काफी करीबी बिंदु पर भी हैं। यह चीन के ''स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स'' रणनीति का एक हिस्सा हैं। इस रणनीति में पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट बेस और कूटनीति गठजोड़, बर्मा में नौसेना बेस, बंगाल की खाड़ी के द्वीपों पर इलेक्ट्रानिक खुफिया सूचना एकत्र करने की सुविधाएँ स्थापित करना, थाइलैण्ड के क्रा स्थमस को पार करते हुए नहर के निर्माण के लिए फंडिग, कंबोडिया के साथ सैन्य समझौता और दक्षिण चीन सागर में सेना का जमावड़ा आदि शामिल हैं। चीन की पहल ''वन बेल्ट वन रोड'' 150 बिलियन डॉलर की हैं, जो चीन को वैश्विक मामलों में वृहद भूमिका निभाने की ओर ले जाएगा।

क्षेत्रिय समुद्री अस्थिरता के संदर्भ में भारत ईरान के चाबहार बंदरगाह के उच्च राजनयिक सौदा को एक रणनीतिक जीत के तौर पर देखा जा रहा हैं। ग्वादर बंदरगाह से बमुश्किल 72 किमी दूर चाबहार बंदरगाह को लेकर भारत ने ईरान के साथ रणनीतिक चाबहार बंदरगाह समझौता किया। चाबहार रणनीतिक सौदे के अलावा भारत–बांग्लादेश समुद्री टैंगो, उभरते दक्षिण चीन सागर से लेकर हिंद महासागर रिम और अरब की खाड़ी तक फैले समुद्री रिश्ता भारत को गंभीर संकल्प की ओर ले जा रहा हैं जिसका अभी तक अभाव था।

भारत की महत्वाकांक्षी परियोजना सागरमाला प्रोजेक्ट–2 है जो प्रमुख बंदरगाह और समुद्री बुनियादी ढ़ाँचे और कनेक्टिविटी की परियोजना हैं। प्रोजेक्ट का लक्ष्य आधारभूत ढाँचें का विकास, तटीय आधुनिकीकरण, मशीनीकरण और कंम्प्यूटरीकरण से बारह प्रमुख और 160 छोटे बंदरगाहों को जोड़ना हैं जहां केन्द्र और राज्य सरकारों और निजी कंपनियों को संयुक्त रूप से एक आधुनिक भारत के सबसे कुशल समुद्री बुनियादी ढ़ाँचे को कनेक्ट करना हैं। महत्वाकांक्षी सागरमाला परियोजना भारत की जीडीपी में 2 फीसदी के विकास दर बढ़ाने के लक्ष्य के साथ कम से कम एक दर्जन प्रस्तावित स्मार्ट शहरों और कई तटीय आर्थिक क्षेत्र (सीईजेड)की कनेक्टिविटी का प्रस्ताव हैं। भारत दुनिया का एक बड़ा समुद्र तट शक्ति होने के बावजूद, हमारा शिपिंग उद्योग और तटीय बुनियादी ढ़ाँचा और उसकी आर्थिक उत्पादकता दुनिया के कई छोटे समुद्री देशों के साथ भी मेल नहीं खाता है।

भारत म्यांमार के पश्चिमी सिल्वे में बंदरगाह का निर्माण कर रहा हैं तो दूसरी और वहां के सत्तारूढ़ जुंटा के लिए सैन्य हार्डवेयर का सबसे बड़ा सप्लायर भारत ही हैं। आसियान सदस्य देश हिंद महासागर में गश्त के लिए भारतीय नौसैना के साथ शामिल हो गए हैं। इसका उद्देश्य जलदस्युओं पर अंकुश लगाना, समुद्री रास्तों पर खतरों से निपटना और तस्करी रोकना हैं। भारत ने सदस्य देशों के साथ फारस की खाड़ी में भी नौसेना गतिविधियों को बढ़ा दिया हैं। कुवैत, ओमान, सऊदी अरब, कतर, संयुक्त अरबअमीरात और जिबोती के साथ अभ्यास के अलावा उनसे पोर्ट की सुविधा देने की भी मांग कर रहा हैं।

हिंद महासागर में स्थिरता बनाए रखने का उद्देश्य भारत की आर्थिक हितों की धड़कन को बनाये रखना हैं। अपने निर्यात का 95 प्रतिशत से अधिक के आसपास का व्यापार जलमार्ग के माध्यम से भेजा जा रहा हैं। भारत में खपत होने वाली तेल की 81 प्रतिशत से ऊपर की मात्रा अरबसागर के माध्यम से प्रदान की जाती हैं। भारत वास्तव में अपतटीय ब्लॉक में अपने हाइड्रोकार्बन का 70 प्रतिशत तक दोहन करता हैं। हाइड्रोकार्बन के अलावा हिंद महासागर में कई अन्य मूल्यवान खनिज हैं। टाइटेनियम, जिरकोनियम, और थोरियम भारतीय मन्नार की खाड़ी और बंगाल की खाड़ीमें पाये जाते हैं। कई लाख वर्ग किलोमीटर में समुद्र के तल कथित बहुल धातु जिंक पिंड से आच्छादित हैं, ये वो ज्वालामुखीय मिश्रण हैं जिसमें मैंगजीन, लोहा और निकल हैं। इन क्षेत्रों के अनेक भागों का

दोहन व्यावसायिक रूप से किया जा सकता हैं। ओएनजीसी विदेश लिमिटेड ने पेट्रो वियतनाम के साथ तीन साल के लिए समझौता किया हैं। यह समझौता तेल क्षेत्र में दीर्घावधि के लिए सहयोग विकसित करने को लेकर हैं।

समुद्री दक्षता को रणनीतिक तरीके से संरचनाबद्ध करना आज की जरूरत है। चाबहार से लेकर सागरमाला तक भारत के समुद्री क्षेत्र में उभरती भूमिका का केवल विचार नहीं है बल्कि भारत के लिए संभव आर्थिक विकास की रणनीति और रोजगार सृजन के अवसर के लिए वास्तविक समय सामरिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा करने वाले लक्ष्य है। भारत की नौसेना कूटनीति भारत की सुरक्षा गतिशीलता को मजबूत बनाने और पड़ोस के परे भारत की समुद्री दृश्यता को भूमंडलीकृत करेगा, वहीं एकीकृत और कुशल समुद्री गलियारा अगली पीढी के आर्थिक विकास का रास्ता खोलेगा जो भारत की आंतरिक जरूरत और वैश्विक उम्मीद भी है। भारत चाबहार में 500 मिलियन डालर तक निवेश करने के बारे में सोच रहा है। चाबहार को ईरानी गैस को भारत लाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

भारत हिंद महासागर रिम एसोसिएशन जैसे अनेक संस्थाओं ओर मंचों का सक्रिय सदस्य है, जिसका ध्यान व्यापारिक मुद्दों पर केंद्रित है तथा जिसकी शुरुआत 1997 में की गई थी या फिर भारत में बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल के साथ भी है। दोनों ब्रिक्स, जी–20 तथा BASIC जैसे वैशिक मंचों और एक दूसरे के साथ सहयोग कर रहे हैं। दोनों देशों को सामुद्रिक कंटिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइलों की तैनाती से आपसी टकराहटों से बचने के लिए वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति और सौहार्द बनाए रखने की जरूरत है।

दोनों देशों को एससीएस, ईसीएस, सीपीईसी और ओबीओअर शांति पहल जैसे जटिल मुद्दों पर सीधा टकराव से बचने के लिए एक दूसरे की वैध आकांक्षाओं को समायोजित करके एक दूसरे के साथ सीधे संघर्ष को रोकने ''पंचशील और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व'' दोनों नीतियों में अपने पूर्ण विश्वास की पुष्टि करने के लिए भी एक बहुत अच्छा मौका है और पर्याप्त संभावना भी है।

भारत को अपनी समुद्री कूटनीति को और मजबूत करने के लिए अपनी नौसेना के आधुनिकीकरण में निवेश करना होगा। भारत को क्षेत्रीय देशों के साथ सहयोग बढ़ाना होगा। समुद्री निगरानी और खुफिया तंत्र को मजबूती प्रदान करते हुए भारत अपनी को दृढ़ता से आगे बढ़ना चाहिए। भारत को इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाते हुए अपने को मजबूत बनायें। भारत और चीन के बीच समुद्री प्रतिस्पर्धा 21वीं सदी की भू–राजनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जहाँ चीन अपनी आक्रामक रणनीतियों के माध्यम से हिंद महासागर में प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, वहीं भारत अपनी संतुलित और सहयोगात्मक समुद्री कूटनीति के माध्यम से क्षेत्रीय स्थितरता बनाए रखने का प्रयास कर रहाहै। भविष्य में भारत की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह किस प्रकार अपनी समुद्री शक्ति, कूटनीतिक कौशल और क्षेत्रीय साझेदारियों का प्रभावी उपयोग करता है। यदि भारत इन क्षेत्रों से संतुलन बना लेता है, तो वह न केवल चीन की चुनौतियों सामना कर सकेगा बल्कि एक वैश्विक समुद्री शक्ति के रूप में भी उभर सकता है।

***सह आचार्य–राजनीति शास्त्र**
स्व.पं.न.कि.श. राजकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय, दौसा (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रेस्टेर, डेविड, इण्डिया एज एन एशिया पेसिफिक पॉवर 2012

2. राजा मोहन, सी., ''समुद्र मंथनः सिनो–इंडियन रिवालवरी इन दी इण्डो–पेसिफिक 2012
3. एस. खुराना, गुरप्रीत, ''मेरीटाइम सिक्योरिटी इन दी इण्डो–पेसिफिक'', 2019
4. फेयर, सी. क्रिस्टाइन,''इण्डो–ईरानियन रिलेशंसः प्रोस्पेक्टस फॉर बाइलेटरल को– ऑपरेशन पोस्ट 9/11, एशिया प्रोग्राम स्पेशल रिपोर्ट अप्रैल 2004
5. कौडा, विनय, ''इण्डिया एण्ड ईरानः चौलेन्जेज एण्ड ऑर्पोच्यूनिटी, दी डिप्लोमेट मैगजीन, सितंबर 2015
6. रॉय, मीरा सिंह, मोदीज विजिट टू ईरानः विल इट प्रोवाइड न्यू मोमेन्टम टू बाइलेटरल रिलेशंस आईडीएसए, मई 2016
7. ''भारत की समुद्री कूटनीति और चीन का सिल्करोड'', वर्ल्ड फोकस अंक 57, दिसंबर 2016
8. मिनिस्टरी ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट 2022
9. इंस्टिट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एण्ड एनालसिस (आईडीएसए)– स्ट्रेटेजिक पेपर्स 2020.